कामयाबी का मेयार

"तज़हीब" नगरौरी, लखनऊ

"अलिफ़ लाम मीम" ये कुरआन वह किताब है जिसमें किसी तरह के शक और शुब्हे की गुन्जाइश नहीं है ये साहेबाने तक़वा (परहेज़गार लोगों) के लिए मुजस्सम हिदायत है जो गैब पर ईमान रखते हैं पाबन्दी से पूरे एहतेमाम के साथ नमाज़ अदा करते हैं और वह उन तमाम बातों पर भी ईमान रखते हैं जिन्हें (ऐ रसूल) हमने आप पर नाज़िल किया है और जो आप से पहले नाज़िल की गयीं हैं। यही लोग अपने परवरदिगार की तरफ से हिदायत के हामिल हैं और फ़लाहयाफ़्ता और कामयाब हैं।"

ऊपर लिखी आयतें कुरआने हकीम के सूरःए बक़रः की मुहकम आयतें हैं ये सूरः कुर्आने हकीम का सबसे बड़ा सूरः है इसमें दो सौ छियासी (286) आयतें हैं लेकिन हमने जिन आयतों का तरजुमा तहरीर किया है वह सूरःए बक़रः की इब्तेदाई आयतें हैं जिन पर ग़ौर और फिक्र करने के बाद सही नतीजा निकाल कर उस नतीजे के मुताबिक़ अमल करने वालों की कामयाबी की ज़मानत कुर्आने हकीम ले रहा है।

लेकिन सवाल ये है कि कामयाबी का मेयार जो कुरआने हकीम बता रहा है वही मेयार कामयाबी का मेयार अगर है और यक़ीनन है भी तो क्या हम उस कामयाबी के मेयार पर खरे उतर रहे हैं? क्या हमको कुर्आने मजीद के हर सूरेः हर आयत, हर लफ़्ज़ बल्कि हर हर्फ़ पर मुकम्मल यक़ीन है? कहीं हमको कुर्आने हकीम के किसी फ़रमान में शक और शुब्हः तो नहीं? क्या हम साहेबाने तक़वा (परहेज़गार लोगों) में से हैं? क्योंकि यह किताब उन्हीं लोगों के लिए हिदायत है जो साहेबाने तक़वा (परहेज़गार) होंगे। जो ग़ैब पर भी ईमान रखते होंगे। "ईमान बिल ग़ैब" सिर्फ दिल से यक़ीन करने (अक़ीदः रखने) का नाम नहीं है बल्कि अक़ीदे का दिल में यक़ीन और ज़बान से इक़रार करने के साथ-साथ उसी अक़ीदे के मुताबिक़ अमल करने का नाम है। (जिसे शरीअते इमामियः की इस्तेलाह में फ़ुरूए दीन कहते हैं)

मसलन अगर किसी का यह अक़ीदः है कि अल्लाह है और वह दिखाई नहीं देता लेकिन न दिखाई देने के बावजूद अल्लाह कायनात के ज़र्रेः-ज़र्रेः को देख रहा है और हमारी हर-हर नक़लो हरकत को देख रहा बल्कि दिलों के भेदों का जानने वाला है ग़रज़ कि अल्लाह तआला की जितनी भी सिफ़ातें हैं सब पर ईमान हैं तो वह शख़्स ऐसा कोई काम नहीं करेगा जिससे उसका मालिक उससे नाराज़ हो जाये क्योंकि जिससे कामयाबी की सनद अता फरमाने वाला ही नाराज़ हो जाये उसे किस तरह कामयाबी मिल सकती है। और वह किस तरह फ़लाह पाने वालों की लिस्ट में शामिल हो सकता है।?

इसलिए इल्तेमास है कि कुरआने हक़ीम को गले में लटकाने से ज़्यादः उसके एहकामो फ़रामीन को गले से लगाने की तरफ़ हर-हर लम्हा हर-हर क़दम तवज्जो रहे।

आज यह ज़माना है कि माद्दी चीज़ों (दुनिया की चमक-दमक) में खोया हुआ इन्सान कुरआने हक़ीम पढ़ना तो दूर की बात, उसके ग़िलाफ़ पर जमी हुई गर्द तक हटाने के लिए वक़्त नहीं निकाल पाता क्या ऐसे शख़्स को भी मआज़ल्लाह कोई अक़्ल वाला यह कह सकता है कि यह शख़्स फ़लाह याफ़्ता है? हरगिज़ नहीं।

कितने अफसोस का मक़ाम है कि वह कुरआन जो हमारी ज़िन्दगी का दस्तूरुलअमल है, जिसमें कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने के क़ानून बताये गये हैं वह मौत के वक़्त सिर्फ़ मरीज़ को हवा देने के काम में लाया जाता है। या अगर तिलावत की भी जाती है तो सिर्फ इस ग़रज़ से कि सवाब हासिल हो जाये............शायद इसीलिए शायरे रौशन फ़िक्र मुफ़क्किरे इस्लाम अल्लामा इक़बाल (ख़ुदा उनके दरजात बलन्द फरमाये) ने कहा था कि -

"जिसका अमल है बे ग़रज़ उसकी जज़ा कुछ और है।"

और अल्लामा "नज्म" आफ़न्दी[ताबा सराह] ने फरमाया कि -

होशियार तो लेते नहीं कुरआँ से सबक़
बे होश को कुरआँ की हवा देते हैं!

हालाँकि इसी हिन्दुस्तान में भी ऐसे भी कुरआने हकीम पढ़ने वाले मौजूद हैं जो कुर्आन की तिलावत करके उससे अहकामें दीन और अहकामे ज़िन्दगी हासिल करते हैं और उस पर अमल भी करते हैं यक़ीनन ऐसे लोग लायक़े मुबारकबाद हैं लेकिन उनकी ताअदाद बहुत कम है क्योंकि आज इस ज़लील और हक़ीर दुनिया (जो यक़ीनन ख़त्म हो जाने वाली है) में खोये हुए नाम निहाद मुसलमान अपनी कामयाबी का मेयार अपनी ग़लत सोच की वजह से दुनिया के हासिल करने को समझते हैं। और क़ुर्आन को समझना और उस पर अमल करना वक़्त बरबादी तसव्वुर करते हैं।

लेकिन लिल्लाह होशियार———

ये क़ुर्आन रसूले करीम[स॰] की अमानत है और उनके जानशीनों ने अपने-अपने दौर में इसकी हिफ़ाज़त करके आज तक महफ़ूज़ रखा है और बिहम्दिल्लाह आज भी क़ुर्आन का एक मुहाफ़िज़ परदे के पीछे मौजूद है कहीं ऐसा न हो कि मिस्ले यज़ीद कोई क़ुर्आन मजीद पर ईमान रखने का ज़बानी दावा कर रहा हो लेकिन इस ज़बानी दावे के बावजूद अपने आमाल और किरदार से कुरआने मजीद की तकज़ीब कर रहा हो (झुठला रहा हो) और फिर वक़्त का हुसैन[अ॰] अपने जद शहीदे कर्बला की तरह अस्रे हाज़िर के यज़ीदों पर तलवार चला दे............

लेहाज़ः क़ुर्आने हकीम के फ़रमान में गौरो फ़िक्र करके सही नतीजा निकालिए और उस पर उस तरह अमल कीजिए जिस तरह माअसूमीन अलैहिमुस्सलाम ने अमल करके बताया है या जिस तरह असहाबे आइम्मः ने अमल किया है इसी में दुनिया और आख़ेरत की कामयाबी है वरना ईमान और इस्लाम का ज़बानी दावा खोखला साबित होगा।

"सलाम हो उस पर जो हिदायत की पैरवी करे"

बक़िया............ शबे शहादत

राहत और इत्मिनान के मौक़े पर रईसों के दरबार में ख़ुशामदी लोग हद से आगे निकल जाते हैं मगर मुसीबत और बला में ख़तरे के सर पर होने की हालत में एक ग़रीबुल वतन मुसाफ़िर (परदेसी) के सामने जब इस तरह की बातें कही जा रही हों तो उनमें सिवाए सच्चाई और मुहब्बत के हो ही क्या सकता है? और अगर इस वक़्त किसी अन्जाने शख़्स को इन अलफ़ाज़ की सच्चाई में शक महसूस हो तो कुछ ज़्यादा इन्तिज़ार की ज़रूरत न होगी।

इसी रात के गुज़रने के बाद जो दिन आएगा वह कर्बला के तख़्त-ए-ख़ाकी पर बहते हुए ख़ून की तहरीर से इन अलफ़ाज़ के अमल में आने की तारीख़ तैयार करेगा और फिर कुछ घण्टों के बाद इन्हीं बातें करने वालों के कटे हुए सर नेज़ों पर बुलन्द होंगे और उस वक़्त अगरचे उनकी ज़बानें ख़ामोश दिखाई देती हों मगर दिल से सुनने वालों को उनका यह एलान सुनाई देगा कि देखो! जो हमने कहा था वह कर दिखाया। अगर ज़िन्दगी में हुसैन[अ॰] के क़दमों पर रहे तो लाशे हमारे ख़ाक के अन्दर हुसैन[अ॰] की लाश के क़दमों के पास और सर हमारे नेज़ों पर हुसैन[अ॰] के सर के पीछे ही पीछे हैं और इसी की क़दरदानी थी जो हुसैन[अ॰] के आख़िरी वारिस इमामे अस्र[अ॰] ने उनको मुख़ातब करके आवाज़ दीः-

"मेरे माँ-बाप तुम पर फ़िदा, ऐ मुजाहिदीने कर्बला! तुम भी पाक हुए और वह ज़मीन भी पाक हो गई जिसमें तुम दफ़्न हुए और ख़ुदा की क़सम तुम ने एक बड़ी कामयाबी हासिल की, "काश मैं भी तुम्हारे साथ होता और इस बड़ी कामयाबी में शरीक होता"

हमारे दिल में भी हक़ की मदद का यही जोश होना चाहिए। आइये हम आप मिलकर कहें
"काश— हम सब भी आपके साथ होते और इस बड़ी कामयाबी में शरीक होते"

